अवधपुरी अति रूचिर बनाई

महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वरपुरी
उपाध्यक्ष
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

पुण्य नगरी अयोध्या

पूर्वोत्तर सरयू नदी के दाहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर अयोध्या एक प्रसिद्ध तीर्थ और सप्त पुरियों में से एक पुरी है।

अयोध्या-मथुरामायाकाशीकांचीअवन्तिका ।

पुरी द्वारावतीचैवसप्तैतेमोक्षदायिकाः ।।

अयोध्या प्राचीन समय में सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी थी। राजा दशरथ के समय, जिनके पुत्र रामचंद्र हुए थे, कौशल- राज की राजधानी अयोध्या नगरी का विस्तार 12 योजन अर्थात् 48 कोस था। रामचंद्र जी के पश्चात कौशलराज्य के दो भाग हो गए। उनके बड़े पुत्र कुश ने कुशावती और छोटे पुत्र लव ने श्रावस्ती को (जो गोंडा जिले में अब सेहत महत नाम से प्रसिद्ध हैं) अपनी राजधानी बनाई। उसके बाद कुश कुशावती को ब्राह्मणों को देकर फिर अयोध्या में आए। सूर्यवंशी राजा सुमित्र के बाद अयोध्या बीरान हो गयी और राजवंश छितरा गए। सुमित्र के मरने पर बौद्ध राजा हुए, जिनसे उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने अयोध्या को छीन लिया। उन्होंने पुराने शहर के पवित्र स्थानों का पता लगाया।

विक्रमादित्य के पश्चात अयोध्या और कौशलराज्य क्रम से समुद्रपाल, श्रीवास्तभ और कन्नौज राजवंश के आधीन रहा। चीन - के रहने वाले हुएत्संग ने 7वीं शताब्दी में अयोध्या में ब्राह्मणों की बड़ी आबादी, २० बौद्धमंदिर और ३००० फकीरों को देखा था।

बाबर ने जन्मस्थान के राममंदिर को तोड़ कर सन् 1528 में उस स्थान पर मस्जिद बनवा ली।

अकबर के समय हिंदू लोगों ने नागेश्वरनाथ, चंदहरि, आदि देवताओं के दश पांच मंदिर बना लिये थे, जिनको औरंगजेब ने तोड़ डाला। अवध के नवाव सफदरजंग के समय दीवान नवलराय ने नागेश्वरनाथ का मंदिर बनवाया। दिल्ली की बादशाहत के घटते काल के समय अयोध्या में मंदिर बनने लगे। साधुओं के अनेक अखाड़े आ गये। नवाव वाजिदअली शाह के राज्य के समय अयोध्या में ३० मंदिर बन गए थे। अब छोटे बड़े सैकड़ों मंदिर बन गये हैं।अयोध्या में सन् 1881 की मनुष्य-गणना के समय 2545 मकान (जिनमें 864पक्के) और 11643 मनुष्य थे; अर्थात् 9499 हिन्दू, 2141 मुसलमान और 3 दूसरे। 96 देवमन्दिर, जिनमें से 63 वैष्णव-मन्दिर और 33 शैव-मन्दिर, और 36 मस्जिदें थी।

लक्ष्मणघाट से थोड़ी दूर 90 फीट ऊंचे टीले पर जैनों के आदिनाथ का मन्दिर है। कनकभवन, राजा दर्शन-सिंह का शिवमन्दिर और हनुमानगढ़ी यहाँ के मन्दिरों में उत्तम हैं। अयोध्या में वैरागी बैष्णवों के बहुत मठ हैं, जिनमें रघुनाथदास जी, मनोराम बाबा और माधोदास के मठ प्रधान हैं। रघुनाथदास की गद्दी पर पूजा चढ़ती है। मनीराम बावा के यहां सदावर्त जारी रहता था, और साधुओं को भीड़ रहती थी।

अयोध्या का प्रधान मेला चैत्र रामनवमी को होता है, जिसमें लगभग लाखो की संख्या मे यात्री आते हैं। यात्रीगण सरयू के स्वर्गद्वार घाट पर रामनवमी के दिन स्नान दान करते हैं। सरयू नदी की प्रधानता और इनका माहात्म्य सब स्थानों से अयोध्या में अधिक है। यह नदी हिमालय पर्वत से निकल कर लगभग 600 मील बहने के उपरांत छपरे से 14 मील पूर्व गङ्गा में मिली है। सरयू और कौरियाला नदियों का संगम अयोध्या से पश्चिम बहराइच जिले में है। संगम से पूर्व उस नदी को कोई घाघरा और कोई सरयू कहते हैं। बहर मघाट के निकट चौका नदी सरयू में दाहिने से आ मिली है ।अयोध्या में श्रावण शुक्ल 11 से पूर्णिमा तक मन्दिरों में झूलनोत्सव होता है। उस समय के हिण्डोले देवमूर्तियों के श्रृंगार फवारे आदि मनोहर सामग्री देखने और देवदर्शन करने के लिये हजारों यात्रीगण आते हैं। अयोध्या के देवमन्दिर और दर्शनीय स्थान

(१) **स्वर्गद्वार घाट** – यह घाट रामघाट से पश्चिम अयोध्या में स्नान का मुख्य स्थान है। सीढ़ियां पत्थर की बनी हैं। स्वर्गद्वारघाट और इसके पूर्व और पश्चिम घाटों को राजा दर्शनसिंह ने पत्थर से बनवाया था। घाट से ऊपर कई और देवमन्दिर हैं।

(२) **नागेश्वरनाथ का मन्दिर-** स्वर्गद्वारघाट से ऊपर सुंदर शिखरदार मन्दिर में अयोध्या के शिवलिंङ्गो में

नागेश्वरनाथ शिवलिंङ्ग हैं। नागेश्वरनाथ के मन्दिर को मुसलमानों ने कई बार तोड़ दिया और हिंदुओं ने बनवाया। वर्त्तमान मन्दिर को नवाब सफदरजंग के दीवान नवलराय ने बनवाया। रामघाट से अयोध्या के राजा को महल तक सड़क के दोनों ओर भी मन्दिर हैं, जिनमें वाएं

(३) सुरसरि की रानी का मन्दिर

(४) भीगा के राजा का मन्दिर और

(५) बेतिया के राजा का मन्दिर और दहिने

(६) टेकारी के राजा का मन्दिर

(७) रूसो के बाबू का मन्दिर, और

(८) नरहन की *रानी का मन्दिर है।

अयोध्या के महाराज के महल के पास एक सुन्दर वाटिका में अयोध्या के उत्तम मन्दिरों में से एक सुन्दर शिखरदार पंच मन्दिर है, जिसको अयोध्या के राजा दर्शनसिंह ने बनवाया था। मध्य के मन्दिर में दर्शनेश्वर शिवलिंङ्ग हैं, जिसके निकट मार्बल की नन्दी की बड़ी मूर्ति है। दक्षिण-पश्चिम के मन्दिर में गणेशजी, पश्चिमोत्तर के मन्दिर में पार्वतीजी, पूर्वोत्तर के मंदिर में एक शिवलिंङ्ग हैं। मंदिर में श्वेत और नीले मार्बल का फर्श है, दीवारों में बड़े बड़े दीवारगीर और आइने लगे हैं और ऊपर से बड़ बड़े झाड़ लटके हैं। बाटिका के दक्षिण पुराना राजमहल और उत्तर नया राजभवन है। नए राज-भवन के भीतर एक आंगन के चारो तरफ के मंदिरों में राधा, कृष्ण, राम ,जानकी, शिव, अन्नपूर्णा और योगमाया की मनोहर मूर्तियां हैं।

अयोध्या के राजा दर्शनसिंह शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। इनके पुत्रो में राजा मानसिंह हुए, बड़े भाई के रहने पर भी मान- सिंह ही राजसिंहासन पर बैठे। उनको कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उनके मरने पर उनके नाती अर्थात् पुत्री के पुत्र अयोध्या नरेश महाराज प्रतापनारायणसिंह उनके उत्तराधिकारी बने। हनुमानगढ़ी के संमुख राजा मानसिंह की रानी का बनवाया हुआ राजद्वार नाम से प्रसिद्ध अठपहला शिखरदार एक बड़ा मंदिर है। मंदिर में रामचंद्र जी की मूर्तियां हैं।

(११) हनुमानगढ़ी अयोध्या के प्रधान स्थानों और उत्तम इमारतों में से एक है। इसके बाहर की दीवार एक ओर से

२०० फीट और एक ओर से १५० फीट लम्बी है। इसकी उंचाई बाहर से ४५ फीट है। इस गढ़ी में ६० सीढ़ियों के ऊपर हनुमानजी का शिखरदार मंदिर है, जिसमें हनुमानजी के निकट रामचन्द्र और इनके सम्बन्धी लोगों को पच्चीस तीस मूर्तियां हैं। हनुमानजी की मूर्ति सर्वत्र खडी रहती है, केवल इसी मन्दिर में बैठी हुई है। लोग कहते हैं कि इनकी पुरानी मूर्ति, जो तीन फीट ऊंची है, फूलों में दबी रहती है। बड़ी मूर्ति, जो ३ फीट लंम्बी होगी, जिनके दर्शन होते है, बाद की स्थापित है।

(१२) अयोध्या के सब मन्दिरों से बड़ा और सुन्दर कनकभवन है। मन्दिर लगभग २ विग्रह में हैं। बड़े आंगन के तरफ पर दो- मञ्जिलें, तीन मंजिले मकान और मेहरावदार दालान बने हैं, ऊपर सैकड़ों सुनहरी कलशियां हैं। पश्चिम के मकानों में सुनहरे सिंहासनों पर मनोहर मूर्तियां हैं, जो संवत् १९४७ में स्थापित हुई। इनमें उत्तर की ओर राम जानकी की नई मूर्तियां, और इससे दक्षिण दूसरे भवन में लक्ष्मण जी को एक नई मूर्ति है। मन्दिर के चौखटों और किवाड़ों में सोने चांदी का उत्तम काम है, आगे के जगमोहन में सफेद मार्बल के दोहरे खम्भे लगे हैं। इस मन्दिर को बुंदेलखण्ड के अन्तर्गत टीकमगढ़ के महाराज महेन्द्र सवाई प्रतासिंह बहादुर ने एक लाख रुपए खर्च करके बनवाया है। पहले चरण पादुका के पास एक छोटे मन्दिर में राम जानकी को मूर्तियां थी, जो अब नए मन्दिर में स्थापित हुई हैं। रामनवमी के समय महाराज मन्दिर में आए थे।

(१३) राज महल स्थान पर एकमन्दिर में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, जानकी की मूर्तियां गुरू वशिष्ठ की चरण पादुका और विश्वामित्र का आसन है।

(१४) रत्न सिंहासन स्थान पर एक मन्दिर में राम, लक्ष्मण, जानकी और वशिष्ठ मुनि की मूर्तियां हैं।
(१५) आनन्द-भवन स्थान पर एक मन्दिर में कौशल्या की गोद में रामचन्द्र, कैकेई की गोद में भरत, सुमित्रा की गोद में शत्रुघ्न और राजा दशरथ के आगे लक्ष्मण हैं और ऋषि वशिष्ठ और काकभुसण्डी की मूर्ति भी हैं।

(१६) राम कचहरी स्थान पर एक मन्दिर में राम, लक्ष्मण, जानकी, राधा, कृष्ण, बदरीनाथ, बालाजी जगन्नाथजी और ३६० सालग्राम हैं।

(१७) कोप-भवन स्थान पर एक मन्दिर में दशरथ, कैकेई, राम, लक्ष्मण, वशिष्ठ ऋषि और मंथरा है। दूसरे मन्दिर में २४ अवतारों की २४ मूर्तियां हैं।

(१८) सोता की रसोई स्थान पर एक मन्दिर में राम, जानकी, लक्ष्मण, भरत, भरत की पत्नी, दूसरी कोठरी में दशरथ, शत्रुघ्र, कौशल्या, कैकेई, सुमित्रा. राम, लक्ष्मण, जानकी, जगन्नाथ, बलभद्र, और सुभद्रा हैं। १० सीढ़ियों के नीचे एक तहखाने में चूल्हा चकला और बेलना है, जिनके पास जानकी, लक्ष्मी. और वशिष्ठ की मूर्तियां है।

(१९) कोप- भवन से आगे हनुमानगढ़ी से एक मील पश्चिम जन्मस्थान है, जहां रामचन्द्र का जन्म हुआ था। यहां उज्जैन के महाराज विक्रमादित्य का बनवाया हुआ, उत्तम मन्दिर था जिसको बाबर ने तोड़ कर उस स्थान पर सन् १५२८ ई० में मस्जिद बना ली। मन्दिर के दरवाजे पर पत्थर पर लिखा है कि सन् ९३३ हिजरी में मस्जिद बनी।

अयोध्या की परिक्रमा

यह 6 मील की छोटी परिक्रमा है, जो रामघाट से प्रारंभ होकर यहां पर ही समाप्त होती है। परिक्रमा में इस क्रम से स्थान और मंदिर मिलते हैं

(१) रघुनाथदास की गद्दी

(२) सीताकुंड

(३) अग्निकुंड,

(४) विद्याकुंड

(५) मनीपर्वत

यह 65 फीट ऊंचा एक टीला है, जिसके ऊपर छोटा मंदिर है। कच्ची सीढ़ियों से मंदिर के निकट जाना होता है।

(६) कुवेरपर्वत - यह मनोपर्वत से लगभग 200 गज दक्षिण 28 फीट ऊंचा एक टीला है।

(७) सुग्रीवपर्वत - कुबेरपर्वत से थोड़ी दूर पर 560 फीट लंबा और 300 फीट चौड़ा सुग्रीव- पर्वत नामक टीला है।

(८) लक्ष्मणघाट- स्वर्गद्वार से थोड़ी दूर दक्षिण- पश्चिम सरयू के किनारे लक्ष्मणघाट पर लक्ष्मण-कीला नामक टीला है, जिसके ऊपर एक मंदिर और कई देवस्थान बने हैं। किले के नीचे सरयू किनारे पत्थर की दीवार है।

(९) स्वर्गद्वारघाट

(१०) नाव के पुल के पास रामघाट।

इस परिक्रमा के अतिरिक्त 5 कोस. 14 कोस और 84 कोस की परिक्रमा हैं। 14 कोस की सरयू की परिक्रमा कार्तिक शुक्ल नवमी के दिन से होती है।

सूर्यकुंड

रामघाट से 5 मील सूर्यकुंड की दूरी है। यह सूर्यकुण्ड राजा दर्शनसिंह ने बनवाया है। चारो ओर 12 घाट बने हैं, जिनमें एक गौघाट और एक जनानाघाट है। जनानाघाट पर स्त्रियों के लिये स्नानागार बना है। तालाब के पश्चिम किनारे पर एक मंदिर में सूर्यनारायण की मूर्ति है।

गुप्तार घाट

इसका नाम पुराणों में गुप्तारघाट लिखा है। यह अयोध्या से 9 मील पश्चिम दिशा में स्थित है। गुप्तारघाट पर सरयू की पावन धारा में स्नान होता है। घाट के पास राजा टिकैत राय का वनवाया हुआ गुप्तहरि जी का मंदिर है, जिससे उत्तर एक घेरे में राजा दर्शनसिंह के पुत्र रघुवरदयाल का बनवाया हुआ उत्तम मंदिर है। मंदिर के पास कई और छोटे मंदिर है,इसके आगे सुंदर घाट है। गुप्तार घाट से 1 मील दक्षिण में निर्मलीकुंड के पास निर्मलनाथ महादेव का मंदिर है।

नंदीग्राम

अयोध्या से 16 मील दक्षिण दिशा कि ओर नंदीग्राम में भरतकुंड नामक सरोवर और भरत जी का मंदिर है। भरत जी रामचंद्र जी के बनवास के समय इसी स्थान पर रहते थे।

अयोध्या के रामघाट से 8 मील पूर्व सरयू के किनारे पर वह स्थान है, जहां राजा दशरथ जी का दाह हुआ था।